B 8132
714845 | हस्ताo

से. रा. यात्री
रज/ई-7 नया कविनगर
गाज़ियाबाद
201002
15/1/99

प्रिय कु. प्रभाकान्त

सस्नेह स्मरण!

आशा है तुम स्वस्थ सानन्द होगी!

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ ग्रहण करो। मैं आन्तरिक कामना करता हूँ कि तुमने जो काम हाथ में लिया है उसे पूरी निष्ठा, परिश्रम और आस्था से पूरा करो। यह परिश्रम तुम्हारे आगामी जीवन की सफलता की नींव बने।

तुम्हारा 1 जनवरी का पत्र मैंने पढ़ा। मैं दो जनवरी से बाहर (राजस्थान) गया था। आज ही लौटकर तुम्हारा पत्र देखा। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि तुम्हें डाक्टर [illegible] का प्रकाशित शोध प्रबंध उपलब्ध हो गया है। उसमें मेरा जीवन वृत्त (बायोडाटा), कुछ उपन्यास और 1984 तक के उपन्यास एवं कहानियों का लेखा जोखा है। वह सामग्री तुम्हारे काम में पर्याप्त सहायक होगी क्योंकि उसमें मेरे व्यक्तिगत जीवन के बारे में बहुत कुछ संगृहीत है।

कुछ उपन्यास मैंने बेहतर बनाने के लिए पुनर्लेखन के लिए भी चुने हैं और उन्हें उस तरह लिखा भी है। मेरा उपन्यास 'अनजान राहों का सफर' 'प्यासी नदी' नाम से 'सरस्वती विहार' से छपा है जो पहले उपन्यास (अनजान राहों का सफर) से निश्चय ही बेहतर बन पड़ा है। 'सरस्वती विहार' प्रकाशन के स्वामी श्री दीनानाथ मल्होत्रा प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान 'हिन्द पाकेट बुक्स' के भी स्वामी हैं। उन्होंने 1983 में मेरे दोनों उपन्यास ('दराज़ों में बंद दस्तावेज़' और 'प्यासी नदी') हिन्द पाकेट बुक्स की पेपर बैक में भी प्रकाशित किए हैं।

मेरे ~~[illegible]~~ चारों उपन्यास — (दराज़ों में बंद दस्तावेज़, लौटते हुए, प्यासी नदी, [illegible]) आदि ने अपनी [illegible] को आलोच्य विषय बनाया है। चूँकि तुम इनमें से तीन अपने प्रबंध के लिए चुन रही हो इसलिए उनकी भूमिका से तुम्हें बहुत कुछ उपलब्ध होगा। उन्होंने 'लौटते हुए' को छोड़कर बाकी तीनों उपन्यासों की [illegible] प्रकाशित की है।

मेरे प्रकाशक ने मेरी अनुमति के बिना।

फिलहाल मेरे पास अपना कोई ऐसा फोटो नहीं है जो तुम्हें भेज सकूँ। फोटो खिंचवाने से मुझे एक तरह की एलर्जी है। यह फोटो टी.वी. पर एक प्रोग्राम देते समय का है। यदि इससे काम चले तो चला लेना।
यात्री

मुझसे बिना पूछे और मेरी जानकारी के अभाव में मेरा उपन्यास 'तीरं की दरार' 'ज्यों का त्यों' 'बनते बिगड़ते रिश्ते' के नाम से छाप डाला। जिससे पाठकों को भ्रम हुआ कि यह कोई नया उपन्यास है। यह बात भी मुझे पाठकों के पत्रों से ही ज्ञात हुई। मैंने उस प्रकाशक की बहुत भर्त्सना की और उससे संबंध विच्छेद कर लिया। मैं तुमको यह तथ्य इसलिए बतला रहा हूँ कि तुम्हें वास्तविकता का पता रहे। वैसे भी 'बनते बिगड़ते रिश्ते' को तुम्हें अपने प्रबंध में रखना भी नहीं है।

मेरा उपन्यास 'सुबह की तलाश' 1994 में आत्माराम एंड संस से प्रकाशित हुआ है। उपन्यास पढ़ने के बाद यदि उस संबंध में तुम्हारी कोई जिज्ञासा हो तो पूछ सकती हो। इस उपन्यास में मैंने एक सुशिक्षित युवक को अपंग व्यक्तियों के लिए स्वयं को समर्पित करते हुए अंकित किया है। नायक अपने मित्र की बहन को प्रेम करने के बावजूद अपने मन की बात नहीं कहता। हाँ जब उस युवती का तय किया हुआ रिश्ता टूट जाता है तो बिना दान दहेज के (अपने मित्र की सहायता से) उससे विवाह कर लेता है और उसे अपने साथ लेकर अपंगों की सहायतार्थ बनाये हुए संस्थान में लेकर चला जाता है।

* → मेरे सभी उपन्यासों में नारी के भीतरी अन्तर्द्वन्द्वों को प्राथमिकता दी गई है और उसकी उदात्तता, महानता - अद्भुत सहनशीलता - शक्तिमत्ता और समर्पणशीलता को प्रधानता और व्यापकता का विषय बनाया गया है। संसार की कोई भी स्त्री, किसी भी वर्ग की स्त्री यहाँ तक कि जिसे पतिता कहा जाता है वह भी मेरी रचनाशीलता की दृष्टि में संसार के महानतम पुरुषों से भी अधिक वंदनीय और आदरणीय है। मैंने अपने इस दृढ़ विचार को ही अपने रचना संसार के केन्द्र में रखा है। शायद यही कारण है कि रवीन्द्र, प्रेमचन्द, शरत और दोस्तोयेवस्की मेरी दृष्टि में संसार के उत्कृष्टतम लेखक हैं।

तुमने मेरे पूरे नाम की बाबत जबरदस्त जिज्ञासा व्यक्त की है। तुम्हारे यहाँ मराठी में तो मेरी तरह के ही नाम रखने की

पड़ता है। कई लेखक ना.सी. फड़के, वि.स. खांडेकर तथा अन्य अनेक इसी तरह का नाम रखते हैं। फिर मेरे ही नाम को लेकर यह भ्रम / जिज्ञासा क्यों हुई? तो यह सच है कि मैं मराठी लेखक नहीं हूँ। शुद्ध हिन्दी प्रदेश में पैदा हुआ हूँ। मैं उत्तर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिला सहारनपुर के जड़ौदा पांडा नामक गाँव में जन्मा हूँ। मैं तुम्हें अपने नाम की कहानी क्या बतलाऊँ, वह बहुत अनोखी है। पंडित ने मेरा जन्म नाम सेवाराम निकाला था। मैं इसी नाम से 1960 तक रचनाएँ करता रहा। तब मैं कहानी उपन्यास नहीं लिखता था — कविताएँ लिखता था और आल इंडिया रेडियो से ब्राडकास्ट करता था। 1960 जनवरी में मैं इलाहाबाद गया तो श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने मेरे नाम का बहुत मज़ाक बनाया और कहा कि मुझे सेवाराम नाम से कविता की दुनिया में स्वीकार नहीं किया जाएगा। मैंने अपना 'यात्री' उपनाम हाईस्कूल में ही रख लिया था इसलिए मेरा पूरा नाम 'सेवाराम यात्री' था।

मैंने अश्क जी की बात पर काफी विचार किया पर कोई नया नाम मुझे नहीं सूझा। पर एक दिन अंग्रेजी में अपने हस्ताक्षर S. R. Yatri करते हुए मुझे विचार आया कि मैं इस नाम के हिन्दी में हस्ताक्षर करूँ तो कैसा रहे? हस्ताक्षर हिन्दी में बने से. रा. यात्री (यानी सेवा का 'से.' राम का 'रा.')। बस बात बन गई। तभी मैंने एक कहानी लिखी थी — 'गर्द और गुबार' (यह कहानी डा. हिंदी की पीठिका में पृष्ठ 44 पर है) यह एक जबरदस्त प्रेम कहानी है। उन दिनों 1963 में 'राजकमल प्रकाशन' से नई कहानियाँ पत्रिका निकलती थी। संपादक थे पुराने व यशस्वी कथाकार श्री कमलेश्वर। उन्होंने मेरी उस प्रथम कहानी को मेरे द्वारा 'डिस्कवर' किए गए नाम से ही छापा। न केवल छापा बल्कि उस पर एक उत्तम टिप्पणी भी दी। बस उस कहानी को छपना था कि मैं इस कदर चर्चा में आ गया कि हिन्दी की सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं ने कहानी भेजने के लिए आग्रह भरे पत्र भेजने शुरू कर दिए। उसके बाद मैंने कोई कविता नहीं लिखी। मेरा कवि मेरी कहानियों तथा उपन्यासों में जीवित होता रहा। अभी भी मैं कहानी उपन्यास लिखता हूँ पर मैं मूलतः स्वयं को कवि ही मानता हूँ। तुम मेरे चारों उपन्यास पढ़कर इस तथ्य को जान लोगी। अपनी कोई भी जिज्ञासा बाद में लिख सकती हो।

सस्नेह / से. रा. यात्री

752958] दूरभाष
714845]

से. रा. यात्री
एफ - ई ७ नेहरू कविनगर
गाज़ियाबाद
201002
7/12/98

प्रिय कु. प्रभावलकर
सस्नेह स्मरण !

आपका 1 दिसम्बर का पत्र मिला - आभारी हूँ। आप मेरे साहित्य पर शोध प्रबंध लिख रही हैं - इसके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। हिन्दी में अत्यन्त कम लिखनेवाला लेखक हूँ इसलिए आपके अनेक प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास [illegible] हूँ। अच्छा हो कि आप उन शोधप्रबंधों को देखें जो मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के प्रोत्साहन से मेरे साहित्य पर लिखे हैं। बीड के बलभीम कालेज (स्नातकोत्तर महाविद्यालय बीड) के हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री डॉ. [illegible] ने मेरे व्यक्तित्व एवं साहित्य पर कई लोगों को पी. एच. डी. की उपाधि दिलवाई है। मेरी जानकारी में डॉ. राम - बी - हिरे (श्रीमान् [illegible] राव हिरे) ने 1988 में 'कथाकार से. रा. यात्री व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर मराठवाड़ा औरंगाबाद विश्वविद्यालय से डाक्टरेट प्राप्त की थी। उनका 292 पृष्ठों का प्रबंध 1992 में अन्नपूर्णा प्रकाशन 127/1100 सब्जी मंडी - साकेत नगर कानपुर - 208014 से प्रकाशित हुआ था। यह प्रबंध 200 रु. मूल्य का है। हो सकता है आपके कॉलेज की लायब्रेरी में हो। इस प्रबंध से आपको अपने अधिकांश प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे। इसमें 1988 तक छपी पुस्तकों का विवरण भी मिल जायेगा। आप प्रबंध व्यक्तिगत रूप से मंगाकर अपने विभागाध्यक्ष महोदय के द्वारा हिन्दी विभाग के लिये भी मंगवा सकती हैं। यदि यह प्रकाशक से उपलब्ध न होती मैं डाक्टर मारुति बाबीकराव हिरे का पता लिख रहा हूँ उनसे भी प्रबंध के बारे में पूछ सकती हैं। उनका पता है: डॉ. राम बी. हिरे 'श्री निवास' नागेश्वर वाड़ी औरंगाबाद मराठवाड़ा (महाराष्ट्र)

डा. हिरे के अतिरिक्त श्री. बा. द. बाघमारे ने भी लगभग आठ वर्ष पहले मेरे कथा साहित्य पर पी. एच. डी. की डिग्री ली है - आप उनसे भी सम्पर्क कर सकती हैं। उनका पता है: श्री. बा. द. बाघमारे व्याख्याता आदर्श महाविद्यालय हिंगोली - जिला - परभणी पिन: 431513

• मैं अपनी अबतक प्रकाशित पुस्तकों के बारे में आपको इसी पत्र में बता देता हूँ

उपन्यास (अपराजिता [illegible] दर्रा [illegible] प्रथम संस्करण 1969 45, खुल्दाबाद इलाहाबाद - ((नया प्रकाशन) हिन्द पॉकेट बुक्स 1983

2 - लौटते हुए - 1974 भारती प्रकाशन [illegible] दिल्ली

3 - चाँदनी के आर पार 1978 पंकज प्रकाशन दिल्ली

4 - बीच की दरार 1978 भारती प्रकाशन

5 कई अंधेरों के पार 1981 राजपाल एंड सन्ज कश्मीरी गेट दिल्ली

6 टूटते दायरे 1983 प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाज़ार दिल्ली

7 चांदनी के बाहर 1983 नीलाभ प्रकाशन कश्मीरी गेट दिल्ली

8 जागती रातें सत्तरहवीं सदी 1983 (पॉकेट बुक्स 1983)

9 - अनदेखा मेघ 1984 श्री साहित्य [illegible] 1843 नई सड़क दिल्ली

10 आकाशचारी 1985 [illegible] दिल्ली - 32

11 आत्मदाह 1985 साहित्य सहकार E 10/4 कृष्णनगर दिल्ली

12 [illegible] 1986 नीलाभ प्रकाशन 1550 मदरसा रोड कश्मीरी गेट

13 प्रान्तीय [illegible] 1987 भारती प्रकाशन पटपड़गंज दिल्ली 110006

14 प्रथम परिचय 1987 राजपाल एंड सन्ज कश्मीरी गेट दिल्ली 110006

15 जली रस्सी 1987 पाण्डुलिपि प्रकाशन E - 11/15 कृष्णनगर दिल्ली 110051

मैंने आपको अपनी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकों की सूची प्रकाशन वर्ष सहित प्रेषित कर दी है। अपने अगले पत्र में आप अपनी शोध के विषय में बतायें। से. रा. यात्री

16. बुद्ध अवतार 1987 जन प्रिय प्रकाशन 29/60 गली नं. 11 विश्वास नगर दिल्ली 110032

7. [illegible] 1988 ([illegible] प्रकाशन)

8. [illegible] (1987) [illegible] प्रकाशन 16 यू. बी. बंगलो रोड जवाहर नगर दिल्ली 110007

वैदेही [illegible] 1993 प्रेम प्रकाशन मंदिर 3512 बल्लीमारान दिल्ली

[illegible] 1994 आत्माराम एंड संस कश्मीरी गेट दिल्ली

[illegible] 1997 " " "

[illegible] 1993 भावना प्रकाशन 126 पटपड़गंज दिल्ली 110091

[illegible] 1986 वाणी प्रकाशन 4697/5 21ए दरियागंज दिल्ली 2

[illegible] 1996 साहित्य प्रचारक 3011 बल्लीमारान दिल्ली

कथा संग्रह

दूसरा चेहरा 1971 नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद

[illegible] 1973 भावना प्रकाशन 126 पटपड़गंज दिल्ली

3. काल विदूषक 1976 " "

4. धरातल 1977 पराग प्रकाशन 3/114 विश्वास नगर शाहदरा दिल्ली 110032 (पुरस्कृत)

5. केवल पिता - 1978 राजकमल प्रकाशन 8 नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली

6. सिलसिला - 1979 आलोक प्रकाशन बी 8 नवीन शाहदरा दिल्ली-32 (पुरस्कृत)

7. [illegible] 1981 (पुरस्कृत) निधि प्रकाशन 1590 मदरसा रोड कश्मीरी गेट दिल्ली 110006

8. [illegible] 1983 मीनाक्षी प्रकाशन बेगम ब्रिज मेरठ 250001

9. [illegible] 1985 [illegible] प्रकाशन K.B. 97 कविनगर गाजियाबाद

10. [illegible] 1994 पुरस्कृत साहित्य प्रचारक 3011 बल्लीमारान दिल्ली

11. [illegible] 1993 साहित्य प्रचारक " "

12. [illegible] ([illegible] कहानियाँ) 1998 साहित्य प्रचारक " "

13. [illegible] 1998 किताबघर 24 अंसारी रोड दरियागंज नयी दिल्ली 110002

14. पुल टूटते हुए 1996 आत्माराम एंड संस कश्मीरी गेट दिल्ली

15. चर्चित कहानियाँ 1995 सामयिक प्रकाशन 3543 जटवाड़ा दरियागंज नई दिल्ली 110002

16. [illegible] 1985 साहित्य सहकार

17. [illegible] 1998 तक्षशिला [illegible]

18. [illegible] 1981 [illegible]

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

PATAN 415206 [illegible] 98 DELY

प्रतिष्ठा में

कु. प्रभावलकर वैशाली सदानन्द

सूर्यप्रभा मफतलाल की चाल

ता. पाटण

जिला सतारा (महाराष्ट्र)

पिन PIN 415206

FIRST FOLD

THIRD FOLD

SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS:—

से. [illegible] शर्मा, [illegible]

गाजियाबाद (उ.प्र.)

पिन PIN 201002